

कूर्मान्शं नर्त्यः 49, 1. श्रियमश्नुते Çat. Br. 3, 1, 4, 12, 2, 4, 12, 10, 3, 5, 8, 4, 3, 4. Bṛh. Âr. Up. 1, 3, 22. न वेदफलमश्नुते M. 1, 109. MBh. 3, 1157. 4051. Hit. 1, 78. Naish. 6, 43. घनतं सुवन् M. 4, 149. 8, 46. Bhag. 3, 21. घान्त्यम् M. 9, 107, 137. उत्कृष्टं त्रातिम् 335. घनतम् 12, 104. स्वर्गम् MBh. 3, 12198. प्रीतिम् R. 2, 36, 22. वैष्णव्यम् Bhag. 3, 4. परमारोग्यम् MBh. 3, 13393. क्लृप्त्यवधानांशिरि मनोनाम् Ragh. 7, 20. उदयमस्तमयं च रघुहृत्-डुभयमानांशिरि वसुधाधियाः 9, 9. दिशः (acc. pl.), ककुनः die Weltgegenden auf seinen Antheil erhalten, in die Flucht geschlagen werden, die Flucht ergreifen BHATT. 3, 14, 19, 3, 37. Vgl. दिशो भन्. absol. genießen: घनेन किं वा न ददाति नाश्नुते Hit. 1, 131. — 3) einer Sache mächtig werden, Etwas bemeistern, vermögen: श्यावाश्नुते स्तेममानो RV. 5, 81, 5. श्रमिः सुशोको विश्वान्यथाः 1, 70, 1. 69, 6 (3). श्शानाय प्रकुंतिं यस्तु घानर् 7, 90, 2. न यन्ते ते सव्यमानंशं नर्त्यः 8, 57, 8. यदि त्वा घाकिरान्शो AV. 6, 113, 1. — 4) व्याप्तिं durchdringen, erfüllen NAIGH. 2, 8. Dhātup. 27, 17. Vop. 26, 6. क्षपटिः — खं प्रावृष्यायैरिव चानशो ऽद्वैः BHATT. 2, 30. — 5) संचालते anhäufen Dhātup. Vop. — desid. श्रशिषिषते P. 7, 2, 74 (Sch. °ति). Siddh. K. 133, 6. Vop. 19, 7. — intens. श्रशाश्यते Pat. zu P. 3, 1, 22. Vop. 20, 1, 4. — Hiervon श्रेश, dessen Grundbedeutung also Antheil ist. Vgl. 2. घष् und नष्.

— घनु erreichen, nachkommen, gleichkommen: न ते वघ्नमन्वञ्चोति कश्चन RV. 2, 16, 3. न ते मर्कत्वमन्वञ्चोति 7, 99, 1. यदा ते मर्ता घनु भोग-नार्हत् 1, 163, 7. 32, 14. 8, 59, 5. — med.: नकिञ्चानु मन्मना नकिः स्वश्च घान-शो RV. 1, 84, 6. AV. 4, 23, 2.

— घभि 1) erreichen, erlangen: श्रभीष्टमश्याम् RV. 4, 166, 14. तदस्य प्रियनाभि यथो अश्याम् 134, 5. श्रयानश्न सुवितस्य श्रयम् 10, 31, 3. 2, 24, 6. 3, 11, 7. 7, 93, 8. स्वः प्रविनाभयेनवति AV. 12, 3, 24. Vgl. श्रयश्न und श्रयश. — 2) bemeistern: विशा इत्स्पृधो श्रयश्नवाव RV. 1, 179, 3. विश श्रदेवोरुभ्यश्नवाव 6, 49, 15. कामेन कृतो श्रयानर्कम् 8.

— घा erreichen, erlangen: घा यदिषे नृपतिं तेन घानर् RV. 1, 71, 8. प्रायमाशित्ये ich werde mich dem Hungertode ergeben R. 4, 53, 15. 33, 12. 2, 21, 27. प्रायमाशितुम् 5, 55, 18. Vgl. u. उप.

— उद् 1) an die Spitze kommen: एतेनो कैतो तडुदश्नुवति येनो सर्वं मवनमनुह्यते Çat. Br. 4, 2, 1, 26. — 2) bis an Etwas reichen, erreichen: (स्तेमः) रुद्रस्य सूनृपुर्वन्तुं रुद्रस्याः RV. 5, 42, 15. को वो मर्कति मर्कतामु-द्वन्वत्स्काव्या 89, 4. दिवाश्चरतां उपमां उदानर् 10, 8, 1. — 3) vermö- gen, bemeistern: य उदान्धार्यं य उदान्दुरायणम् 10, 19, 5. उदशेम तवा-वसा । मूर्धानं राय श्रारभे 1, 24, 5. नकिञ्चे पृथ्वस्तुतिम् । उदानंशं शवसा न भन्दना 8, 24, 17.

— उप erlangen, in den Besitz von Etwas kommen: न च लोकानुपा- श्रुते MBh. 1, 3089. पालम् M. 6, 82. 12, 81. सुखम् 20. सुखदुःखम् MBh. 3, 12619. भूतिम् 1243. Vgl. u. 2. घष् mit उप. प्रायमुपाशित्ये ich werde mich dem Hungertode hingeben 15080. Vgl. u. घा.

— परि eintreffen bei, erreichen: परि ते हृत्भो रथो ऽस्मां श्रमोतु वि- श्रतः RV. 4, 9, 8. परि विश्वानि मुधितमोरेश्याम मन्मभिः 3, 11, 8. 1, 178, 1.

— प्र erreichen, eintreffen, zu Theil werden: प्र ते श्रमोतु कुट्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः RV. 2, 31, 12. प्र यदान्दुश घा कर्म्यस्य 1, 121, 1. 17, 9. प्र ते मुषा नो श्रमवत् 8, 79, 6. किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानर् 10, 108, 1. 3, 43, 3. 10, 20, 4.

— वि 1) erreichen, Jmds habhaft werden: ते तं व्याशिषत BHATT. 15, 42. — 2) erlangen, in Besitz nehmen, beherrschen: इमां त्रितमत्रयदिमो व्याष्टिं व्याश्रुत Çat. Br. 10, 2, 4, 8. 2, 2, 4, 17. 12, 3, 3, 2. Âçv. Çr. 10, 6. ते त्रियं त्वा व्यानशे AV. 3, 7, 6. देवा मधोर्व्याश्रत SV. II, 5, 2, 44, 3. व्यानक्रिन्द्रः पतनाः स्वातोः RV. 10, 29, 8. — 3) erreichen, zufallen, zu Theil werden: विश्व-मापुर्व्यश्नुतः RV. 8, 31, 8. विश्वमापुर्व्यश्नुवै VS. 19, 37. विभूक्तमानान्यश्नुवै 20, 23. व्यश्नुको मर्दम् RV. 8, 45, 22. वि पृतेा श्रमे मध्वानो घशुः 1, 73, 5. 54, 9. 73, 9. 89, 8. 93, 3. 10, 27, 7. 83, 12. विश्वा श्राशो व्यानशे AV. 5, 7, 9. 13, 1, 16. 14, 2, 64. 19, 53, 6. क्वं त इन्द्र मर्कित्वा व्यानर् RV. 7, 28, 2. — 4) durchdringen, erfüllen: प्रनापस्तस्य भानोश्च युगपद्यानशे दिशः Ragh. 4, 15. तूर्यधनिर्दचरद्व्यश्नुवानो दिगन्तान् 16, 87. व्यश्नुवाना दिशः प्रा- पूर्वन्म (किंकराः) BHATT. 9, 1. प्रावर्धत रतो भौमं तद्याश्नुत दिशो दश 17, 60. घोषश्च व्यानशे दिशः 14, 96.

— घनुवि hinter Etwas hergehen, erreichen: स उभे स्तुतशस्त्रे घ- नुविभक्तयोः स्तुतशस्त्रे घनुव्यश्नुते Çat. Br. 10, 3, 5, 12.

— सम् 1) erlangen, erreichen: देवत्वमभवः समानश RV. 3, 60, 2, 3. च- नृपधित्समश्नुते AV. 3, 22, 5. लोकान्सर्वान् समानशे 10, 7, 36. 10, 33. यथा मर्कतमधानं विमोकं समश्नुवती Çat. Br. 6, 7, 4, 12. 1, 6, 1, 10. 2, 3, 2, 16. u. s. w. स्वर्गं लोकं समश्नुव्यामहे (fut. mit dem Char. des praes.) 3, 4, 3, 8. वक्ता सनश्नुते Kathop. 6, 14 = Bṛh. Âr. Up. 4, 4, 7. सर्वान्कामान् Taitt. Up. 2, 5. M. 2, 5. 3, 277. श्रम् लोकम् Taitt. Up. 2, 6. ब्रह्मलोकम् M. 2, 233. स्वर्गम् 11, 6. कीर्तिम् MBh. 3, 16963. श्रधम् (पालम्) 2, 2312. समश्नुते मे लघिमानमात्मा Ragh. 13, 37. — 2) entgegenkommen: पृच्छमा- ना सखीयते सं धीतमश्नुतं नरा RV. 8, 40, 3.

— घनुसम् erreichen: येतदन्वाहं तेनानुसमश्नुते Çat. Br. 4, 3, 1, 2.

— उपसम् erreichen, erlangen: उपोषुना सममृत्वमानर् RV. 4, 58, 1.

2. घष्, श्रमोति essen, verzehren, zu sich nehmen (von Menschen und Thieren); mit acc. und gen. (in der klass. Sprache nur acc.) Dhātup. 31, 51. सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन RV. 10, 83, 3. घृतस्य स्तोत्रं सकृदङ्गं श्राप्ताम् 93, 16. यदश्वस्य ऋविषो मन्त्रिकाश 1, 162, 9. यदश्वसि य- त्पिबसि AV. 8, 2, 19. RV. 7, 67, 7. 73, 2. 9, 67, 31. 10, 87, 17. AV. 4, 11, 3. 6, 133, 1. 11, 10, 14. 12, 4, 43. त्रायाया श्रते नाप्तीयात् Çat. Br. 10, 5, 2, 9. 2, 4, 2, 4. 3, 22. 6, 1, 40. 3, 1, 2, 21. u. s. w. praes. Bṛh. Âr. Up. 3, 8, 8. M. 1, 95. 3, 18. 237. 4, 249. 5, 15. 8, 95. R. 1, 19, 22. MBh. 1, 711. 2, 232. 1733. 3, 12672. 13353. Kathās. 24, 246. potent. M. 2, 51. 189. 3, 106. 5, 73. u. s. w. MBh. 3, 104. पायसमश्नीयात् P. 2, 3, 45, Sch. श्रपो ऽशान (imperat.) Pār. Gṛh. 2, 3. Kṛhānd. Up. 4, 10, 3. श्रमोति R. 1, 13, 14. श्रशिष्यति 2, 58, 4. शशिता oder श्रष्टा Vop. 16, 5. माशोः Kṛhānd. Up. 6, 7, 1. श्राश 2. part. praes. श्रमोत् Çat. Br. 11, 3, 4, 15. M. 3, 239. 5, 138. 11, 95. 220. 261. श्रम- ती 4, 43. vgl. श्रमश्नुतः fut. श्रशिष्येत् Çat. Br. 2, 2, 4, 16. 6, 1, 34. 14, 9, 2, 15 = Bṛh. Âr. Up. 6, 1, 14. perf. act. श्रशिष्वं P. 7, 2, 67, Sch. श्रनाश्रम् (mit श्र neg.) P. 3, 2, 109. श्रशित्वं AV. 9, 6, 38. श्रशितावत्यतिश्रावश्री- यात् श्रनशितुम् Kṛhānd. Up. 4, 10, 3. ger. श्रशित्वा Çat. Br. 4, 2, 5, 19. 14, 9, 2, 15 (= Bṛh. Âr. Up. 6, 1, 14). MBh. in LA. 47, 2. श्रनशित्वा Çat. Br. 2, 3, 2, 3. med.: श्रमोमिदं वयं भित्ताम् BHATT. 3, 56. श्रनश्नान् MBh. in Benf. Chr. 37, 23; vgl. u. प्र. pass.: पात्रेषु क्लानमश्रयते Çat. Br. 2, 3, 2, 23. part. श्रशित् AK. 3, 2, 60. Çat. Br. 1, 1, 4, 9. Uebertr. kosten, genießen: श्रमोति दिव्यान्दिवि देवभोगान् Bhāg. 9, 20. प्रत्यन्तं पानमश्नति कर्मणा MBh. 3, 1207.